

अभिनय और संख्या का कीर्तिमान

ललिता पवार

ललिता पवार ने कितनी फिल्मों में अभिनय किया होगा, क्या इसका आपको कोई अनुमान है? ललिता पवार ने एक अभिनेत्री के रूप में कितने साल फिल्मों में गुजरे होंगे, क्या इसका आपको अंदाजा है? शायद नहीं होगा. हो भी नहीं सकता, क्योंकि जिस समय वह अभिनेत्री के रूप में पहली बार कैमरे के सामने खड़ी हुई थीं उस समय को बीते लगभग 73 साल हो चुके हैं. हम और आप तो तब पैदा भी नहीं हुए थे.

उनका निधन अभी दो साल पहले ही हुआ है. मौत के समय पुणे के अपने मकान में वह अकेली थीं. संतान उनके कोई थी नहीं. यह दुनिया छोड़ते समय उन्हें फिल्मों को अलविदा किए दो साल भी नहीं हुए थे. अर्थात् 78 साल की जिंदगी के 68 साल वह बराबर एक्टिंग करती रहीं. इस अर्से में ललिता पवार ने लगभग 800 फिल्मों में काम किया जो अपने आप में एक रिकॉर्ड है.

हिन्दी सिनेमा की कोई भी अभिनेत्री क्या ललिता पवार के 68 वर्ष के सक्रिय अभिनय जीवन के और 800 फिल्मों के कीर्तिमान को तोड़ पाएगी? लगता तो नहीं है, क्योंकि उन जैसी लगन वाली अभिनेत्रियां अब रही ही कहां हैं. आज के जो दर्शक ललिता पवार को जानते हैं व उन्हें चरित्र अभिनेत्री के रूप में पहचानते हैं, उन्होंने पर्दे पर उनका ज्यादातर बुरा और कभी-कभार अच्छा रूप भी उन्होंने जरूर देखा है. लेकिन शायद वे यह विश्वास न करें कि ललिता पवार कभी ललिता थीं और उससे भी पहले अम्बा. कभी वह हीरोइन भी रही थीं. पर्दे पर आकर वह भी देखने वालों को गुदगुदा देती थीं. लोग उनके गाने भी सुनते थे और मन ही मन उन्हें प्यार भी करते थे. यही ललिता पवार कभी बाल अभिनेत्री भी थीं. फिर वह हीरोइन भी बनीं, गायिका भी बनीं और प्रोड्यूसर भी बनी. और ठीक उस



समय जब वह सेक्सी ग्लैमरस हीरोइन थीं, मजबूर हो गईं फिल्मों को छोड़ने के लिए. लेकिन यह तो उनका आत्मविश्वास था जो चार साल बाद भी उन्हें फिल्मों में वापस ले आया. यह बात अलग है कि अब उन्हें हीरोइन के बजाए चरित्र-भूमिकाएं करनी पड़ीं.

ललिता पवार का जन्म इंदौर में हुआ था. उनका नाम अम्बा था. लेकिन प्यार से उन्हें सब अम्बू कहते थे. जब वह मात्र 10 वर्ष की थीं तो अपने पिता के साथ पुणे गईं. वहां एक दिन सब लोग फिल्म देखने आर्य सिनेमा गए जहां *रामायण* दिखाई जा रही थी. यह फिल्म मूक थी क्योंकि तब तक टॉकी फिल्मों का आगमन नहीं हुआ था. अम्बू ने देखा कि स्त्री-पुरुष सामने आ रहे हैं लेकिन बिना बोले इशारे में बात कर रहे हैं. वे क्या कह रहे हैं, यह सब लिखा आ रहा है. अम्बू को ये सब बड़ा अजीब लगा. जब फिल्म खत्म हुई तो उसने भागकर पर्दे के पीछे झांका. चौकीदार से पूछा–ये सब लोग कहां गए? चौंकीदार ने अम्बू से कहा–वे तो आर्य फिल्म कम्पनी में मिलेंगे.

अगले दिन वह भाई को लेकर आर्य फिल्म कम्पनी के स्टूडियो पहुंच गईं. वहां रामायण के पात्रों को देखकर चौंकीं, क्योंकि वे सब तो बोल रहे थे. तो कल ये लोग गूंगे क्यों बने हुए थे, बालिका अम्बू के यह समझ में नही आ रहा था. तभी वहां जमा हुई भीड़ को हटाने के लिए चौकीदार ने डंडा चलाया. एक डंडा अम्बू के भी पड़ा तो वह दूर जा गिरीं. सिर पत्थर से टकराया तो खून रिसने लगा. बच्ची को घायल देखकर काम रुक गया. फिल्म के डायरेक्टर नाना साहेब सरपोतदार ने लड़की को देखा. उसको

डॉक्टरी सहायता दी. पर लोगों को यह देखकर आश्चर्य था कि लड़की बजाय रोने-धोने के सब को एकटक ताके जा रही थी. लड़की का मन बहलाने के लिए सरपोतदार साहब ने कहा–बेटी, तुम फिल्म में काम करोगी?

अम्बू के चेहरे पर फौरन खुशी चमक उठी. बोली–जी हां. 'ठीक हैं', तो कल अपने पिता को लेकर आना, डायरेक्टर साहब ने कहा. अगले दिन अम्बू अपने पिता को लेकर आ गई. आर्य फिल्म कम्पनी ने उसके साथ एक अनुबंध कर लिया–मासिक वेतन 18 रुपए. ठहरने की जगह और खाना कम्पनी की तरफ से. पहली फिल्म *आर्य महिला* और बाद की *पतित उद्धार* में अम्बू ने बाल भूमिकाएं कीं. फिर *गामिनीकावा* में सहनायिका बनकर आई. नाम अभी अम्बू ही था. अम्बू ने इन फ़िल्मों में बड़ी मेहनत से काम किया और तीन साल में 15 से ज्यादा फिल्में कीं.

1930 में वह बंगलोर की कर्नाटक फिल्म कार्पोरेशन की एक फिल्म में काम करने गईं. फिल्म का नाम था *कैलाश*. इस फिल्म में अम्बू नायिका, खलनायिका और नायिका की मां, एक साथ तीन रोल्स में आई थीं. हालांकि *आलमआरा* के आने के बाद हमारे देश में 1931 में टॉकी फिल्मों का निर्माण शुरु हो गया था, लेकिन अम्बू 1934 तक साइलेंट फिल्मों में ही काम करती रहीं. उनकी आखिरी मूक फिल्म *नेक दोस्त* थी. अम्बू से ललिता पवार वह 1932 में तब बनीं जब उन्होंने निर्देशक जी.पी. पवार से शादी कर ली. इस साल कुछ फिल्मों जैसे *भवानी तलवार* में वह अम्बू के ही नाम से आईं किंतु *कैलाश* में ललिता पवार के नाम से. हालांकि पति जी.पी. पवार से



पत्नी अम्बू की ज्यादा दिन नहीं बनी और जल्दी ही पति-पत्नी अलग हो गए, लेकिन उनका दिया नाम ललिता पवार ही पर्दे पर जारी रहा और पुराने नाम अम्बू को उन्होंने हमेशा के लिए पर्दे से ओझल कर दिया.

1934 में जब टॉकी ने लगभग देश के सभी सिनेमाघरों पर कब्जा कर लिया था तो पवार दम्पत्ति ने निर्माता-कलाकार चन्द्रराव के लिए पहली टॉकी फिल्म बनाई *हिम्मत-ए-मर्दां*. इसमें ललिता पवार ने चन्द्रराव के साथ हीरोइन का रोल किया था और अपना गीत भी खुद ही गाया था. यह फिल्म 1935 में सेंसर होकर प्रदर्शित हुई. 1937 में ललिता पवार और पति जी.पी. पवार ने मिलकर एक निर्मात्री संस्था की स्थापना की–डायमंड पिक्चर्स. इसकी पहली फिल्म थी *दुनिया क्या है*. यह फिल्म विश्वविख्यात रूसी लेखक लियो ताल स्तॉय की कहानी पर आधारित थी. इसका निर्देशन उनके पति जी.पी. पवार ने किया था. मधुर काले हीरो थे. पवार दम्पत्ति का यह प्रयास बहुत पसंद किया गया. 1940 में ललिता पवार की *कैप्टन किशोरी*, 1941 में मास्टर विनायक द्वारा बनी *अमृत*, 1942 में आई *कीर्ति*. इन्हीं दिनों वह एक फिल्म में मास्टर भगवान के साथ काम कर रही थीं. एक दृश्य में भगवान ने उनके मुंह पर थप्पड़ मारना था. शॉट के समय भगवान ने ललिता के मुंह पर इतनी जोर से थप्पड़ मारा कि वह बेहोश होकर गिर पड़ीं. उनके कान से खून बहने लगा. तुरंत डॉक्टर बुलाया गया. उसने तुरंत उन्हें अस्पताल ले जाने की सलाह दी.
जांच-पड़ताल के बाद पता चला कि ललिता बाई के चेहरे के एक ओर थप्पड़ की तेजी के कारण हल्का सा लकवा मार गया है. इस घटना ने ललिता पवार को बेहद दुखी व चिंतित कर दिया. वह बिस्तर पर पहुंच गई. हीरोइन के रूप में उनका कैरियर मिट्टी में मिल गया. एक आंख थोड़ी छोटी हो गई. आंख में भैंगापन भी आ गया. इलाज चल रहा था. दिन महीनों में बदल रहे थे, महीने सालों में. दिल थामकर वह अपने



ठीक होने का इंतजार करने लगीं. धीरे-धीरे चेहरा ठीक हो गया. लेकिन आंख में आया अंतर पूरी तरह से दूर नहीं हुआ. बहुत हिम्मतवाली थीं ललिता. वह अभी 28 वर्ष की ही हुई थीं. अगर स्वस्थ रहतीं और दो साल से ज्यादा समय तक स्टूडियो से दूर न रहना पड़ता तो हीरोइन के रूप में वह कहीं की कहीं पहुंच गई होतीं. परंतु भगवान के थप्पड़ ने उनको कहां से कहां पहुंचा दिया.

उन्होंने वक्त की नजाकत को समझा. जब वह ठीक होकर स्टूडियो की दुनिया में लौटीं तो पहली फिल्म मिली *गृहस्थी*. यह फिल्म एस.एम.यूसुफ के निर्देशन में बनी थीं. *गृहस्थी* बेहद पसंद की गई. इस फिल्म ने जुबली मनाई. इसमें ललिता पवार के काम की बड़ी तारीफ हुई. अब हीरोइन ललिता पवार के अभिनय-जीवन का एक नया अध्याय आरंभ हो गया. वह चरित्र भूमिका में आने लगीं. कभी वह षड़यंत्रकारी बनकर *राम शास्त्री* में आयीं तो कभी निर्दयी सास बनकर दहेज में और कभी वह बेहद नेक बनकर मैडम डिसूजा के रूप में *अनाड़ी* में आयीं. हिट फिल्म *आनंद* की नर्स की भूमिका की उनके उन चरित्रों से कोई समता ही नहीं थी जिनमें वह सास, भाभी या सौतेली मां बनकर आई थीं. लेख टंडन की *प्रोफेसर* की उस बुआ को भला कौन भूल सकता है जो अपनी दो युवा भतीजियों पर अंकुश रखते-रखते एक दिन स्वयं भी हमउम्र प्रोफेसर के मोहजाल में फंस जाती है. धीरे-धीरे चोली की बांह छोटी होती है. पलक-नोंक संवरने लगती है. लोग हंसते हैं, लेकिन कितना दर्द और बेबसी होती है उस चरित्र में. ललिता पवार एक बड़ा खज़ाना छोड़ गई हैं फिल्मों का और उन फिल्मों में अपने चरित्रों, अपनी बेहतरीन भूमिकाओं का. ऐसी भूमिकाएं जिनको देखकर आंसू आ जाते हैं या जिनको देखकर मुंह से गालियां निकल आती हैं. चाहे वह *रामशास्त्री* हो या दहेज, *श्री 420* हो या *अनाड़ी, मेम दीदी* हो या *आनंद, छोटा भाई* हो या *बहू बेगम, प्रोफेसर* हो या फिर *बुड्ढा मिल गया*.

हिन्दी सिनेमा की उन अभिनेत्रियों में से जिन्हें देखने वाले कभी नहीं भूल पाएंगे, ललिता पवार भी एक हैं. एक कलाकार के रूप में उनको टाइप्ड करना कभी संभव ही नहीं रहा. न तब जब वह हीरोइन थीं और न तब जब वह चरित्र अभिनेत्री बन गईं. ट्रेजिडी, कॉमेडी व हृदय को झखझोर देने वाली भूमिकाएं भी वह उतनी ही कुशलता से करती थीं जितनी सहृदयता से रुला देने वाले रोल किया करती थीं. अगर कहा जाए कि हिन्दी सिनेमा को दूसरी ललिता पवार कभी नहीं मिल सकती, तो यह गलत नहीं होगा. इतना लंबा सक्रिय कैरियर और भूमिकाओं में इतनी विविधता अभी तक तो किसी दूसरी अभिनेत्री की जीवन-यात्रा में नहीं देखी गई. भारतीय सिनेमा को आज भी तलाश है ललिता पवार के विकल्प की. क्या उनका विकल्प मिल पाएगा? शायद नहीं.

- बच्चन श्रीवास्तव